

Written by कुमार सौवीर
Thursday, 03 August 2017 21:25

: 00 00 0000000000 00 000000 00, 00 0000 0000 00 00 00 0000000000 00000 00 000000
0000 : 00 00 00000000000000 000000000000 0000 00000000 00000000, 00 00000000 00 00000000
00000 0000 0000000000 00 000000 : 00 0000000000 00 000000000000 0000 00
0000000-00000000000000 00 000000 00 000000 00 0000 0000 0000000000 0000000000 :

00000000 0000000000

00 0000000000 : दरसल पत्रकरता लोकतंत्र की रक्षा केलां होती है। लोकतंत्र समतामूलक समाज की स्थापना केलां विचारो के आदान प्रदान और संवाद क दूसरा नाम है। सत्ता पक्ष साधन संपन्न होता है और अपने उद्देश्य और उपलब्धियों के प्रचार प्रसार केलां धन क प्रयोग करता है और स्वार्थपूर्ति के भी मुलम्मा चढा कर पेश करता है। तब जन अभिव्यक्ति क माध्यम पत्रकरता होती है। इसीलां पत्रकरता के व्यवस्था वरीधी कहा जाता है।

दरअसल, पत्रकरता ही वह तत्व है, जो अव्यवस्था और सत्ता के छल को बेनकाब करती है। चूंकि संसाधनों पर नियंत्रण सरकार और सत्ता पक्ष क होता है। इसीलां उसकी त्रुटियों, वरीधी भासों के साथ नैतिक और आर्थिक भ्रष्टाचार उजागर करना पत्रकरता क दायित्व है।

लेकिन आज विडंबना यह है कि हम सब किसी न किसी राजनीतिक दल के चश्मे से खबरो को देखते है। यह दशाहीनता के चलते नहीं, बल्कि हमारी स वार्थी-प्रवृत्ति और हर-कके हाथों बकिजाने, झुकजाने, समझौता कर लेने की इच्छा के चलते ही होता है। इसीलां अब हालत यह हो चुकी है कि वपिक्ख में खामियां खोजना, और सत्ता-सरकार में खूबियां तलाशना पत्रकरता हो गया है।

000000000000 00 000000 000000 00 000000 00 0000 00000000 00000 00 000000 000000 :-

00000000 000000000000

इसक दुष्परिणाम यह सामने आ रहा है कि अगर कोई आपके विचारो से अलग मत रखता है तो हम टरोल यानि वैचारिक बलात्कार केशकिर बना दां जाते है। अगर असहमति गले नहीं उतरती तो वपिक्ख के कुम्भो क हवाला दे कर सत्तापक्ष को सही ठहराने लगते है। ये प्रवृत्ति अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता क हनन करती है। वनिश तक की सीमा तक विधंस करी।

समझ लीजां समाज ने आपके बहुत दूरह जम्मेदारी दी है वो है सत्तापक्ष की कमियों, गलतियों और अपराधों के प्रतिक्रिा रवैय्या अपनाना। क्योंकि आप स कपर नहीं उतर सकते, ऐसे मे क्लम आपक हथियार है। आप जनमत तैयार करते है। पत्रकर यथार्थ क कूर नरिमम पक्ष को देखने की ताकत रखता है। इसीलां उसे दुनिया रंगीन नजर नहीं आती। सत्ता पर दबाव बना कर उसे दुनिया के सतरंगी बनाना है।

Written by कुमर सौवीर
Thursday, 03 August 2017 21:25

ये सरिफ़ ऊमा भारती की पोस्ट क मसला नहीं है। उनके भावात्मक आवेग के हम लोग बरसो से देखते आ है लेकिन उनक क मूल्यांकन सारगर्भी है। मतिर हमे अपनी बात रखने क पूरा अधिकार है। अतः आपसे सादर नविदन है क पत्रकारिता और प्रचार के बीच की लक्ष्भण रेखा की पवतिरता के समझेंगे साथ ही हमारी भावनाओं के भवषिय मे भी अपने हृदय मे स्थान देंगे। सादर। आपक अंशुमान

00 0000 00000000 000000000 00000000 00000000 00 0000 00, 00000 000000 00000 000 00 00
000000000000 00 0000 00000000000000 00000 00000 00 00000, 00000 00 00000 000000 00 00
00000-00000000000 00000 00000000000 00 0000 00000 0000000 0000000 000000 00 00 00000000
0000000000 00 00 000000 0000000 00000000 00000000 00 00000000 0000 00 00000 00000 00 00000000 00
00000000 00000000 0000 00000000 00000 00 00 00000 000000000 00000 00000000 00000 00000 00
0000000000 00 00 00000 00000